। ओरसे इसमें
। लिखा है वह
मचार पत्रोंके
तथा देशनेता-
। प्रगट की हैं
। है।
जैन सरावगी
से ओतप्रोत
ऐसी संभ्रान्त
अथवा हिन्दू-
... सिर्फ २५००
वर्ष पुराना है,) जैनधर्मकी प्राचीनता बाबत जनताको सच्ची जानकारी हो, ५०० प्रतियां अपनी ओरसे छपवाकर अमूल्य ... वितरणकी हैं। आपको इस प्रशस्त भावनाके लिये धन्यवाद है।

... इसके अलावा जिन बन्धुओंको जैनधर्मके प्रति अन्यान्य श्रेष्ठ विद्वानोंकी शुभ संमतियां मिलें, या उनके पास हों वे मुझको भेजनेकी कृपा करें ताकि अग्रिम संस्करण इससे भी अधिक सुन्दर बन सके। बस!

ता. १-३-४८ } आप सबका—"स्वतंत्र" सूरत।

जैनधर्म पर अेक मत।

मैं विश्वासके साथ यह बात कहूंगा कि महावीर स्वामीका नाम इस समय यदि किसी सिद्धान्तके लिये पूजा जाता है तो वह अहिंसा है। अहिंसा तत्वको यदि किसीने अधिकसे अधिक विकसित किया है तो वे महावीर स्वामी थे।

—स्व० महात्मा गांधी।

जैनोंका अर्थ है संयम और अहिंसा। जहां अहिंसा है वहां द्वेषभाव नहीं रह सक्ता। दुनियोंको यह पाठ पढ़ानेकी जबाबदारी आज नहीं तो कल अहिंसात्मक संस्कृतिके ठेकेदार बननेवाले जैनियोंको ही लेना पड़ेगी।

—सरदार वल्लभभाई पटेल, गृह~~मंत्री भारत सरकार~~।

हिन्दु संस्कृति भारतीय संस्कृतिका एक अंश है, और जैन तथा बौद्ध यद्यपि पूर्णतया भारतीय हैं परन्तु हिन्दू नहीं हैं।

~~—प्रधानमंत्री~~ पं० जवाहरलालजी नेहरू (डिस्कवरी ऑफ इंडिया)।

श्री महावीरजीके उपदेशों पर अमल करनेसे ही वास्तविक शांति प्राप्ति होसक्ती है। इस महापुरुषके बताये हुवे पथका अनुसरण कर

हम शांति लाभ कर सके हैं। आजका संघर्षशील और अशांत संसार तो इस साधु पुरुषके उपदेशोंपर ही चल कर सुख शांति प्राप्त कर सकता है।

—डा० राजेन्द्रप्रसाद [illegible]

भ० महावीरस्वामी जैनधर्मको पुनः प्रकाशमें लाये। वे २४ वें अवतार थे, इनके पहिले ऋषभ, नेमि, पार्श्व आदि नामके २३ अवतार और हुवे हैं, जो कि जैनधर्मको प्रकाशमें लाये थे, इस प्रकार इन २३ अवतारोंके पहिले भी जैनधर्म था, इससे जैनधर्मकी प्राचीनता सिद्ध होती है।

—स्व० लोकमान्य तिलक।

महावीरका सन्देश हृदयमें भ्रातृभाव पैदा करता है।

—हिज एक्सलेंसी सर अकबर हैदरी गवर्नर, आसाम।

मानवताकी बुनियाद पर स्थित हुई विश्वधर्म–भावना अहिंसा और प्रेमके आधार द्वारा प्रकट करना यह "श्री महावीर"का उद्देश्य समझना है।

—श्री जी० वी० मावलंकर प्रेसीडेन्ट लेजे० एसेम्बली।

अहिंसा और सर्व–धर्म समभाव जैनधर्मके मुख्य सिद्धान्त हैं।

—मेजर जनरल रायबहादुर ठा० अमरसिंह गृहमंत्री जयपुर।

आजकलके बिगड़े हुवे वातावरणमें जबकि जातीय भावनायें अपना भयंकर रूप धारण कर देशको हिंसाकी ओर ले जा रही हैं तब भ० महावीरकी अहिंसा सर्व धर्मकी एकताका पाठ पढ़ाती है।

—श्री पं० देवीशंकरजी तिवारी ~~शिक्षा मंत्री जयपुर।~~

जैन धर्मके आदर्शोंका प्रचार करना यह मानव मात्रका उद्देश्य होना चाहिये ।

—सर बी० टी० कृष्णचारी प्रधान मंत्री जयपुर ।

It is impossible to find a begining for Jainism. Jainism thus appears as the earlist faith of India

In, The short studies In Science of Comprative Religious. By G. J R FURLONG.

The names Rishbha, named etc are welknown in Vedic Literature. The members of Jain's order are known as Nirgranths.

In Histroical Gleaninys by Dr Bimalcharan.

जैनधर्म भारतका एक ऐसा प्राचीन धर्म है कि जिसकी उत्पत्ति तथा इतिहासका पता लगाना एक बहुत ही दुर्लभ बात है ।

—मि० कन्नोमलजी M. A. सेशन जज ।

पार्श्वनाथजी जैनधर्मके आदि प्रचारक नहीं थे, इसका प्रचार ऋषभदेवजीने किया था ।

—श्री वरदकांतजी M. A.

सबसे पहिले भारतमें ऋषभदेव नामक महर्षि उत्पन्न हुवे, वे भद्रपरिणामी पहिले तीर्थंकर थे ।

—श्री तुकाराम कृष्णजी शर्मा लट्टू,

B. A. P. H. D. M. R. A. S. Etc.

ईर्षा द्वेषके कारण धर्मप्रचारकवाली विपत्तिके रहते हुवे जैनशासन कभी पराजित न होकर सर्वत्र विजयी होता रहा है। अर्हंत परमेश्वरका वर्णन वेदोंमें पाया जाता है।

—स्वामी विरूपाक्षवडियर M. A.

जैनधर्म सर्वथा स्वतन्त्र है, मेरा विश्वास है कि वह किसीका अनुकरण नहीं है।

—डॉ० हर्मन जेकोबी, M. A. P H. D.

जैनियोंके २२ वें तीर्थंकर नेमिनाथ ऐतिहासिक महापुरुष माने गये हैं।

—डॉ० फुहरर।

अच्छी तरह प्रमाणित होचुका है कि जैनधर्म बौद्ध धर्मकी शाख नहीं है।

—अंबुजाक्ष सरकार M. A. B. L.

जैन बौद्ध एक नहीं हैं हमेशासे भिन्न चले आये हैं।

—राजा शिवप्रसादजी "सितारे हिन्द"

यह भी निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि बौद्धधर्मके संस्थापक गौतम बुद्धके पहिले जैनियोंके २३ तीर्थंकर और होचुके हैं।

—इम्पीरियल गजेटियर ऑव इण्डिया P. 54.

यह बात निश्चित है कि जैनमत बौद्धमतसे पुराना है।

—मिस्टर टी० डब्ल्यू० रईस डेविड।

स्याद्वाद जैनधर्मका अभेद्य किला है, उसके अन्दर वादी प्रतिवादियोंके मायामय गोले प्रवेश नहीं कर सक्ते। मुझे तो इस बातमें

किसी तरहका उज्र नहीं कि जैनधर्म वेदान्त आदि दर्शनोंसे पूर्वका है।

—पं० राममिश्रजी आचार्य रामानुज सम्प्रदाय।

The duration of the world is equally infinite and unbounded, no end. It has no begining and no end it is no eternity (3) Subs lunce is every where and always in uninterrpted movement and transformation now here is perfcet repose and regidity yet the infinite quantity of matter of externally Changing force remains constant.

In. The Roddle of the universe.

by, m/r HECKAL.

नेमिनाथ श्री कृष्णके भाई थे। —श्रीयुत बर्वे।

एकाकी निस्पृहः शांतः, पाणिपात्रो दिगम्बरः।
कदा शंभो ! भविष्यामि, कर्म निर्मूलनक्षम॥

—भर्तृहरि।

नाहं रामो न मे वांछा, भावेषु न च मे मनः।
शान्तिमास्थितुमिच्छामि, स्वात्मन्येव जिनो यथा॥

—योगवशिष्ठ, गीता।

ऐतिहासिक सामग्रीसे सिद्ध हुआ कि आजसे ५ हजार वर्ष पहिले भी जैनधर्मकी सत्ता थी।

—डा० प्राणनाथ ऐतिहासज्ञ।

महामारी प्रभाव बारे परम सुहृत् भगवान ऋषभदेवजी महाशील

धारे सब कर्मसे विरक्त महामुनिनको भक्तिज्ञान वैराग्य लक्षणयुक्त परम-हंसनके धर्मकी शिक्षा करते भये। —भागवत् स्कन्ध ५ अ० ५।

शुकदेवजी कहते हैं कि भगवानने अनेक अवतार धारण किये, परन्तु जैसा संसारके मनुष्य कर्म करते हैं वैसा किया। किन्तु ऋषभ-देवजीने जगतको मोक्षमार्ग दिखाया, और खुद मोक्ष गये। इसीलिये मैंने ऋषभदेवको नमस्कार किया है —भागवत् भाषाटीका पृ. ३७२।

वर्द्धमान अपनेको उन्हीं सिद्धांतोंके पवर्तक बतलाते थे जो पूर्ववर्ती उन २३ महर्षियों अथवा तीर्थंकरोंकी परम्परा द्वारा जिनका इतिहास अधिकतर आख्यानोंके रूपमें मिलता है प्रकाशमें लाये थे। वे किसी नये मतके संस्थापक नहीं थे। ईस्वी पूर्वकी पहिली शताब्दिमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवकी उपासना करनेवाले मौजूद थे, जिनके पर्याप्त प्रमाण हैं। स्वयं यजुर्वेदमें तीर्थंकरोंके प्रमाण मौजूद हैं। भागवतपुराण भी इसी बातकी पुष्टि करता है। जैनयोंका धर्ममार्ग पहिलेके अगणित युगोंमें चला आया है।

In Indian Philosophy P. 287.

B. Dr.—Sir Radha Kirshanan,

Voice Chansler Hindu Univer City

BENARES.

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

यजु० अ० २५ मंत्र १९।

नेमिराजा परियाति विद्वान् प्रजां पुष्टि वर्धमानो अस्मै स्वाहा ॥

यजु० अ० ९ मंत्र २५।

ऋषभं मा समानानां सपत्नानां विषा सहिम् ।
हन्तारं शत्रूणां कृधि, विराजं गोपितं गवाम् ॥

ऋग्वेद अ० ८ मंत्र ८ सूत्र २४ ।

जैनधर्म विज्ञानके आधार पर है, विज्ञानका उत्तरोत्तर विकास विज्ञानको जैन दर्शनके समीप लाता जारहा है ।

—डॉ० एल० टेसी टोरी इटली ।

महावीर जैन धर्मके संस्थापक नहीं थे, किन्तु उन्होंने उसका पुनरुद्धार किया है । वे संस्थापककी बजाय सुधारक थे ।

—हर्बर्टवारन, इंगलैन्ड ।

मैं आशा करता हूं कि वर्तमान संसार भगवान महावीरके आदर्शों पर चल कर आपसमें बंधुत्व और समानताका भाव स्थापित करेगा ।

—डॉ० सातकौड़ीमुकर्जी ।

साहित्यका शृंगार तो वह लौकिक भाषा है, जिस भाषामें भ० महावीरने आशीर्वाद दिया था ।

—डॉ० कालिदास नाग ।

भ० महावीर द्वारा प्रचारित सत्य और अहिंसाके पालनसे ही संसार, संघर्ष और हिंसासे अपनी सुरक्षा कर सकता है ।

—डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जी, अध्यक्ष हिन्दु महासभा ।

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है, जैन दर्शन मनुष्य दर्शन नहीं है । जिन 'देवता' नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे ।

—प्रो० हरिसत्य भट्टाचार्य ।

जैनमत तबसे प्रचलित हुआ, जबसे संसारमें सृष्टिका आरम्भ हुआ। मुझे इसमें किसी प्रकारकी आपत्ति नहीं है कि जैन धर्म वेदान्तादि दर्शनोंसे पूर्वका है।

—डॉ० सतीशचन्द्र प्रिन्सिपल संस्कृत कोलेज, कलकत्ता।

आर्योंके भारत आगमनसे पूर्व भारतमें जिस द्रविड़ सभ्यताका प्रचार हो रहा था, वह वास्तवमें जैन सभ्यता ही थी। जैन समाजमें अब भी द्रविड संघ नामसे एक अलग धार्मिक आम्नाय मिलती है।

—एर षणुखम् चेट्टी।

यद्यपि वेदोंमें पशुबलिको स्वर्ग प्राप्तिका साधन बतलाया है, तथापि उस समयके जैन मुनियोंके प्रभावसे कुछ तो परिवर्तन हुआ ही। महात्मा तीर्थंकरोंके अहिंसा तत्वज्ञानका संसारमें बोलबाला हुआ। उपनिषदोंमें जैनियोंका प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

—हाईकोर्ट जस्टिस सर नियोगी।

मुझे जैन तीर्थंकरोंकी शिक्षा पर अतिशय भक्ति है।

—नेपाल चन्द्रराय अधि० शांतिनिकेतन।

अब तक मैं जैन धर्मको जितना जान सका हूं मेरा दृढ़ विश्वास हो गया है कि विरोधी सज्जन यदि जैन साहित्यका मनन कर लेंगे तो विरोध करना छोड़ देंगे। —डा० गंगानाथ झा, एम. ए. डी. लिट्।

वैदिक साहित्यमें ऋषभ नेमि आदि नाम प्रसिद्ध हैं, जैनधर्म अनुयायी निर्ग्रन्थ कहे जाते थे।

—डा० विमलचरण ला।

जैन हिन्दुओंकी सन्तान नहीं हैं।

—सर कुमारस्वामी चीफ जस्टिस ऑव् मद्रास हाईकोर्ट

जैनधर्मका मैं प्राचीनतत्व स्वीकार करता हूं।

—कोलब्रुक।

सम्राट् अशोकने काश्मीर तक जैन धर्मका प्रचार किया था।

—अबुल्फज़ल (अकबरका दरबारी रत्न)।

चन्द्रगुप्त स्वतः जैन था वह श्रमणों (जैन गुरुओं) से उपदेश सुनता था। —मेगास्थनीज ग्रीक इतिहासकार।

वृषभदेव जैन धर्मके संस्थापक थे।

—श्रीमद्भागवत।

हिमालयसे लेकर कन्याकुमारी तक किंबहुना उससे भी आगे सीलोन तक, व करांचीसे कलकत्ता तक, अथवा उससे भी आगे श्याम, ब्रह्मदेश, जावा आदि देशोंमें जैनधर्मी लोग फैले हुवे थे।

—गोविन्द वासुदेव आप्टे बी० ए० इंदौर।

जैनधर्म हिन्दू धर्मसे सर्वथा स्वतंत्र है।

—प्रो० मैक्समूलर।

जैनधर्म प्राचीन कालसे है।

—जगद्गुरु शंकराचार्य।

जैनधर्म इस देशमें ब्राह्मण धर्मके जन्म या उनके हिन्दू धर्म कहलानेके बहुत पहिलेसे प्रचलित था।

—रागनेकर जस्टिस ऑफ बोम्बे हाई कोर्ट।

महावीरके सिद्धान्तमें बताये गये स्याद्वादको कितने ही लोग संशयवाद कहते हैं, इसे मैं नहीं मानता। स्याद्वाद शसंयवाद नहीं है, किन्तु वह एक दृष्टि बिन्दु हमको उपलब्ध करा देता है। विश्वका किस रीतिसे अवलोकन करना चहिये यह हमें सिखाता है। यह निश्चय है कि विविध दृष्टि बिन्दुओं द्वारा निरीक्षण किये बिना कोई भी वस्तु सम्पूर्ण स्वरूपमें आ नहीं सकती। स्याद्वाद (जैनधर्म) पर आक्षेप करना यह अनुचित है।

—प्रो० आनंदशंकर बाबूभाई ध्रुव,

भूतपूर्व प्रो० वाइस चांसलर हिन्दू विश्व विद्यालय काशी।

मैं अपने देशवासियोंको दिखाऊंगा कि कैसे उत्तम नियम और ऊंचे विचार जैनधर्म और जैन आचार्योंमें हैं जैन साहित्य बौद्ध साहित्यसे काफी बढ़ चढ़ कर है। ज्यों ही ज्यों मैं जैनधर्म तथा उनके साहित्यको समझता हूं त्यों ही त्यों मैं अधिकाधिक पसन्द करता हूं।

—डॉ० जान्स हर्टल, जर्मनी।

मनुष्योंकी उन्नतिके लिये जैनधर्मका चारित्र बहुत ही लाभकारी है। यह धर्म बहुत ही ठीक, स्वतंत्र, सादा, तथा मूल्यवान है। ब्राह्मणोंके प्रचलित धर्मोंसे यह एकदम ही भिन्न है। साथ ही साथ बौद्ध धर्मकी तरह नास्तिक भी नहीं है।

—डॉ० ए० गिरनॉट, फ्रान्स।

महावीरने डिमडिम नादमें भारतमें ऐसा सन्देश फैलाया कि

धर्म यह केवल सामाजिक रूढ़ि नहीं है, किन्तु वास्तविक सत्य है। मोक्ष यह बाहिरी क्रियाकाण्ड पालनेसे प्राप्त नहीं होता। धर्म तथा मनुष्यमें कोई स्थायी भेद नहीं रह सकता।

—स्व० कवि सम्राट् रवीन्द्रनाथ टैगोर।

जिन्होंने मोह मायाको और मनको जीत लिया है ऐसे इनका खिताब "जिन" है, और ये तीर्थंकर हैं। इनमें बनावट नहीं थी, दिखावट नहीं थी। जो बात थी साफ़ थी। ये दुनियाके जबर्दस्त रिफार्मर जबर्दस्त उपकारी और बड़े ऊंचे दर्जेके उपदेशक हो गुजरे हैं। यह इन्सानी कमजोरियोंसे बहुत दूर थे, इनमें वैराग्य था, इनमें धर्मका कमाल था।

—श्रीयुत शिवव्रतलालजी वर्मन, अनेकों पत्रोंके (साधु, तत्वदर्शी, मार्तण्ड, सन्तसंदेश आदि पत्र) सम्पादक, तथा अनेकों ग्रन्थोंके (विचार कल्पद्रुम, कल्याण धर्म आदि ग्रंथ) रचयिता, अनेक ग्रन्थोंके (विष्णु-पुराण आदि) अनुवादक।

प्राचीनकालमें दिगम्बर ऋषि ऋषभदेव "अहिंसा परमोधर्मः" यह शिक्षा देते थे। उनकी शिक्षाने देव मनुष्य और इतर प्राणियोंके अनेक उपकार किये हैं।

—डॉ० राजेन्द्रलाल मिश्र।

चौदह मनुओंमेंसे पहिले मनु स्वयंभूके प्रपौत्र नाभिका पुत्र ऋषभदेव हुआ, जो दिगम्बर जैन सम्प्रदायका आदि प्रचारक था। इनके जन्मकालमें जगतकी बाल्यावस्था थी।

—भागवत स्कन्ध ५, अ० २ सूत्र ६।

जैन ऋषभके चारित्रसे जनता मंत्र मुग्ध थी।

—महाभारत, मोक्षधर्म अध्याय।

प्राचीनकालके भारतवर्षीय इतिहासमें जैनियोंने अपना नाम अजर अमर रक्खा है।

—कर्नेल टॉड साहेब।

जैनधर्म, बौद्धधर्मसे अत्यन्त प्राचीन है।

—मिस्टर एडवर्ड थामस।

जैनधर्म प्राचीन है. और उसका विश्वास अहिंसामें है।

—राजगोपालाचार्य, गवर्नर बंगाल प्रान्त।